

# प्रेमोन्मादिनी श्रीयशोदा

चौथा प्रेमी- ( जय जय मनाकर ) मेरे निर्मल धनी !

आपके कृपा-प्रसाद की कनी प्राप्त करके मेरी तो खूब बनी । मेरा मन संसार से ऊपर उठकर नन्दगाँव की गलियों में घूमने लगा, परन्तु वहाँ वह हर्ष की हरियाली नहीं थी जो प्यारे वनमाली की चाल-मराली देखकर ब्रजवासियों के हृदय में होती थी । मैं धीरे-धीरे महल के पास पहुँचा । बड़ी सिंहपौर प्यारे कन्हैया-की पगली मैया यशोदा माखन, मिश्री, पीताम्बर, कटि-काछिनी-की नन्हीं-सी पोटली बगल में छिपाये छटपटा रही हैं और देव-रानी जिठानी, दासियाँ, पकड़कर पूछ रहीं हैं-‘इस दोपहरी में कहाँ ?’ ‘मेरा कन्हैया जहाँ !’ बावारी मैया ! वे तो मथुरा में हैं, कहीं यहीं थोड़े ही हैं ।’

मैया-‘हाँ, हाँ मैं वहीं तो जा रही हूँ । मैं वहाँ जाकर महारानी देवकी से आरजू मित्रत करके उनकी दासी बन जाऊँगी । कोई न कोई सेवा करूँगी और कभी न कभी तो प्यारे कन्हैया के चन्द्रमुख का दर्शन कर ही लिया करूँगी । भोला-भाला लाला मुझे पुकारेगा-‘ओ मैया की दासी ! ओ मैया की दासी !! आओ तुम्हें मेरी मैया बुला रही है ।’ उसके मीठे-मीठे वचन सुनकर मेरे प्राण ठण्डे हो जायेंगे । उसके लिए मेरे प्राण छटपटा रहे हैं । मुझ अन्धी की वही लकड़ी है । उसके बिना मैं क्या ? और मेरा जीना क्या ? हाय,हाय ! अक्रूर तू मेरा सहारा ही छीन ले गया।’

मैया को ऐसा मालूम हुआ मानों वह मथुरा में महारानी देवकी के दरवाजे पर पहुँच गयी है । पुकारने लगी ‘महारानीजी !’ मुझ वृद्धा की एक विनती मान लो, मुझे अपने महल की एक दासी बना लो । मैं तुम्हारे लाड़ले लाला के लिये दूध बिलोकर सद् माखन निकालूँगी, आटा पीसूँगी, कपड़े धोऊँगी, आप जो कहेंगी सो करूँगी । तुम्हारे लाड़ले अमर हों, तुम्हारा सुहाग अचल हो । मैं तुमसे खाने के लिये भी कुछ नहीं चाहती । जूठन खाकर सुख से रहूँगी । (सब रोते हैं) बस मैं चाहूँगी तो केवल इतना ही-तुम्हारे प्यारे लाला को महीने में एक बार केवल एक बार अपने गले से लगा लूँगी, छाती से चिपटा लूँगी । वे तुम्हारे हैं, तुम्हारे रहें । बस, इतनी कृपा करे दो महारानी ! और कुछ नहीं चाहिये, मैया अधीर होकर गिरने लगी । नन्दगाँव की सिंहपौर पर मैया अधीर होकर गिर ही रही थी कि आस-पास की स्त्रियों ने सम्भाल लिया । रोते-रोते सब की घिग्घी बँध गयी । सब व्याकुल होकर ‘कन्हैया ! कन्हैया !! पुकाराने लगे । कुहराम मच गया ।’ मैं भी कन्हैया ! कन्हैया !! चिल्ला उठा देखा कि मेरे प्यारे बाबलसाईं नन्दबाबा के रूप में कन्हैया का हाथ-हाथ में लिये भीतर आ रहे हैं । आनन्द की बाढ़ आ गयी । हर्ष का कोलाहल मच गया, कन्हैया आ गये ! कन्हैया आ गये ॥

मैया-“आ गया ! आ गया !! कहाँ आ गया ?”

साईंने झटसे आगे बढ़कर कहा कि यह है तुम्हारी जीवन

मूरि । लो, अपने नीलमणि को लेकर प्यार से, दुलार से इनके मुखपर एक चुम्बन की मुहर लगा दो ।’

मैया ने- भूखी प्यासी-मैया ने, आनन्दोन्मत्त होकर झपट के कन्हैया को अपनी गोद में उठा लिया, अपने नीलमणि को चूमने लगी । सद्यः-प्रसूता गौ के समान कन्हैया को चाटने लगी । आकाश से फूल बरसने लगे । ‘कन्हैया की जय हो’ ‘नन्द बाबा की जय हो !’ जय-जय की मंगल ध्वनि से नन्दगाँव गूँज उठा । मैया युगलसरकार को हिंडोले में बिठाकर झोटे देने लगी-“युगल सरकार की जय हो; मिठले बाबल साई की जय हो ।”